Cognitive Thinking: An International Journal of Interdisciplinary Studies
Vol. 2, Issue-2 (April-June, 2026), pp.378-380, ISSN: 3107-5088, www.cognitivethinking.in

पं० दीनदयाल उपाध्याय के विचार एवं राष्ट्रीयता

डा0 कर्मेन्द्र सिंह सेंगर
प्रवक्ता–हिन्दी, श्री मलखानसिंह महाविद्यालय ठूलई (हाथरस)
Email:karmendrasinghsaingar@gmail.com

Article: Received: 15/06/2026, Accepted: 25/06/2026, Published:30/06/2026.
D.O.I. https://doi.org/10.5281/zenodo.22081879

@ 2026 The Author(s). This is an Open Access article/ Journal distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are properly credited. (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

सार: पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितम्बर 1916 में नगला चन्द्रभान, मथुरा उ0प्र0 में हुआ था। विचारों के घनी एवं सुविख्यात समाज सेवक एवं राष्ट्र भक्त के रूप में अपना जीवन व्यतीत करते हुए ख्याति प्राप्त की। उनके विचार तो देखते ही बनते हैं। राष्ट्र के लिए समर्पित होने वाले इस महान व्यक्तित्व को नमन करते हुए उनकी विचारधारा का हमें मनन भी करना चाहिए। राष्ट्र के लिए उन्होनें जब अपने विचार प्रकट किये तो वो बहुत ही गम्भीर हो जाते हैं। उन्हीं के शब्दों में ''हमारी राष्ट्रीयता का आधार भारत माता है, केवल भारत ही नहीं माता शब्द हटा दीजिए तो भारत केवल जमीन का टुकड़ा मात्र रह जायेगा।

मुख्य शब्द: पंडित दीनदयाल उपाध्याय, एकात्म मानववाद, राष्ट्रीयता, राष्ट्रवाद, भारतीय संस्कृति, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, अंत्योदय

प्रस्तावना : पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी महान विचारक अर्थशास्त्री, समाज शास्त्री, इतिहासकार एवं पत्रकार के रूप में विख्यात रहे। पं0 जी ने विभिन्न विषयों पर अपने विचार प्रकट करके एक नई दिशा प्रदान की। उन्होनें 'राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ' के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। कभी भी अपनी जिम्मेदारियों से विमुख नहीं हुए। यही नहीं भारतीय जनसंघ (वर्तमान में भारतीय जनता पार्टी) के अध्यक्ष भी बने। एक मध्यम वर्गीय परिवार में जन्म होने के वावजूद अपनी कर्मठता के आधार पर वह आगे बढ़ते हुए इतने बड़े पद पर आसीन हुए। इनका जन्म प्रतिष्ठित हिन्दू परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री भगवती प्रसाद उपाध्याय था। जो जलेसर (एटा) में स्टेशन मास्टर के रूप में कार्यरत थे, पिता के अन्दर भी राष्ट्रीयता मानवता के गुण विद्यमान थे। इनकी माता रामप्यारी देवी बहुत ही धार्मिक विचारधारा वाली सरल स्वभाव वाली महिला थीं।

उपाध्याय जी ने अपने जीवन में अनेक उतार–चढ़ाव देखे। बचपन में ही अपनी और अपने परिवार की जिम्मेदारियों को सफलता पूर्वक निभाया और अपने दष्ढ़ निश्चय से सफलता के साथ आगे बढ़ते रहे। बचपन से ही समाज सेवा के प्रति समर्पित उपाध्याय जी एक राष्ट्र भक्त के रूप में भी उभर कर आये। अपने कॉलेज के दिनों से ही कानुपर में 'राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ' (आर0एस0एस0) के साथ 1937 में जुड़ गये। डा0 हेडगेवार से सम्पर्क होने के बाद उन्होनें अपने

आपको संगठन के प्रति पूर्णतया समर्पित कर दिया। वर्ष 1951 में जब संघ का प्रथम महासचिव नियुक्त किया गया तब डा0 श्यामा प्रसाद मुकर्जी के सम्पर्क में आये। क्योंकि इसकी स्थापना श्यामा प्रसाद मुकर्मी ने ही की थी। उनकी कार्य क्षमता सराहनीय थी। इसी कार्य क्षमता को देखकर मुकर्जी जी ने कहा कि अगर मेरे पास दो दीनदयाल हो तो मैं भारत का राजनीतिक चेहरा बदल सकता हूँ। लेकिन मुकर्जी के 1967 में असमय निधन के बाद पूरी जिम्मेदारी

उपाध्याय जी पर ही आ गयी। भारतीय जनसंघ के 14वें वार्षिक अधिवेशन में उपाध्याय जी को 1967 में अध्यक्ष किया गया।

सन् 1940 के दशक में लखनऊ से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'राष्ट्र धर्म' (मासिक) में कार्य किया। संघ के कार्यकाल के दौरान साप्ताहिक समाचार पत्र 'पांचजन्य' और दैनिक समाचार पत्र 'स्वदेश' का आरम्भ किया। ये लेखन कार्य से भी निरन्तर जुड़े रहे और साहित्य की दिशा में कदम बढ़ाते हुए उन्होनें 'सम्राट चन्द्रगुप्त' जगत गुरू शंकराचार्य, जब इन सबको हम समाहित करके चलेंगे तो हमारी राष्ट्रीय पहचान अलग बनेगी। जो राष्ट्र निर्माण में सहायक सिद्ध होगी।

उनका मानना था कि सिद्धान्तहीन, अवसरवादी लोगों ने हमारे देश की राजनीति की बागडोर सभाल रखी है, तो ये लोग राष्ट्र का निर्माण कैसे करेंगे। राष्ट्र का निर्माण करने हेतु त्याग और बलिदान वही व्यक्ति कर सकता है जो स्वार्थ की भावना से परे हो और निस्वार्थ भावना से कार्य करे एवं राष्ट्र भक्ति की भावना उसके हृदय में भरी हुई हो। आजादी सार्थक तभी बन सकती है ज बवह हमारी संस्कृति की अभिव्यक्ति का साधन बन जाये। मानवीय और राष्ट्रीय दोनों तरह से यह आवश्यक हो गया है कि हम भारतीय संस्कृति के सिद्धान्तों के वारे में सोचें और यही संस्कृति यानि हमारी भारतीय संस्कृति हमें राष्ट्रीयता के पथ की ओर अग्रसर करायेगी।

राष्ट्र भक्ति कोई वस्तु नहीं है कि जिसने चाहा तभी इसे प्राप्त कर लिया। यह तो एक ऐसे पौधे के रूप में शनै–शनै प्रकट होती है जैसे बीज की एक काई विभिन्न रूपों में प्रकट होती है– जड़े, तना, शाखाएं पत्तियॉ, फूल और फल, इन सबके रूप, रंग और गुण अलग–अलग होते हैं, फिर भी बीज द्वारा हम इन सबके एकत्व के रिश्ते को पहचान लेते हैं। इसी प्रकार राष्ट्र धर्म भी एक बीज के रूप में ही पहचाना जाना चाहिए चाहे उसके रूप रंग अलग–अलग हों। मानव की प्रकृति में प्रेम और बलिदान की भावना होनी चाहिए।

राष्ट्र के बारे में उनका विचार था कि 'एक राष्ट्र लोगों का एक समूह होता है जो एक लक्ष्य एक आदर्श, एक मिशन के साथ जीते हैं और एक विशेष भू–भाग को भारत क्यों है', 'राष्ट्र जीवन की दिशा' आदि साहित्य कृतियों पर अपनी लेखनी चलायी।

उपाध्याय जी विचारों में उनका विचार था कि 'एक एकात्म मानवता बाद के प्रणेता, दार्शनिक, अर्थशास्त्री, समाज शास्त्री, इतिहासकार एवं पत्रकार और राष्ट्रीय भावना के विचारों से परिपूर्ण विचारवादी व्यक्तित्व को धारण करने वाले व्यक्ति थे। भारत जैसे विशाल देश में नैतिकता के रूप में उनका विचार था कि भारत नैतिकता के सिद्धान्तों को धर्म के रूप में माना जाता है– यानि जीवन के नियम।' इन्ही विचारों के बल पर उनका मानना था कि 'नैतिकता के सिद्धान्तो को व्यक्ति नहीं बनाता बल्कि इनकी खोज की जाती है।' ऐसे विचार–शील व्यक्ति का व्यक्तित्व अपने निजी स्वार्थ को छोड़कर काफी आगे निकल गया था। उन्होंने मानव स्वभाव के बारे में आगे अपना विचार दिया कि' जब सवभाव को धर्म के सिद्धान्तों के अनुसार बदला जाता है तो हमें संस्कृति और सभ्यता दोनों प्राप्त होते हैं।

आगे जब राष्ट्रीयता के सम्बन्ध में अपने विचारों को प्रकट करते हुए उन्होंने कहा कि यह जरूरी है कि हम हमारी राष्ट्रीय पहचान के बारे में सोचते हैं जिसे बिना आजादी का कोई अर्थ नहीं है'। इसी विचार धारा में आगे लिखते है कि' अपने राष्ट्रीय पहचान की उपेक्षा भारत की मूलभूत समस्याओं का प्रमुख कारण है। यानि उनका मानना है कि हमारे सामने जो राष्ट्र से जुड़ी समस्याऐं पैदा होती है वो हमारी अपनी ही सोच के कारण होती है। हम अपनी पहचान अपने राष्ट्र के साथ ही क्यों न जोड़कर चलें। यह हमारी संस्कृति भी है, और धर्म भी। अपनी मात्र भूमि के रूप में देखते हैं। यदि आदर्श या मात्र भूमि दोनों में से किसी का भी लोप हो तो एक राष्ट्र संभव नही हो सकता। भारत एक महान एवं बृहद राष्ट्र है। इसमें अनेकानेक संस्कृतियों का सम्मिलन है। यह हमारे लिए गर्व की बात है। उपाध्याय जी इसी संस्कृति और राष्ट्र भक्ति के समर्थक रहे। आजीवन राष्ट्र के प्रति अपना सर्वस्व समर्पण कर राष्ट्र के लिए कार्य करते रहे। राष्ट्र के सजग प्रहरी व सच्चे भक्त के रूप में भारत वासियों के प्रेरणा स्रोत रहे। उपाध्याय जी राष्ट्र निर्माण के कुशल शिल्पियों में रहे हैं। व्यक्तिगत जीवन और राजनीति में भी सिद्धान्त और व्यहार में

समानता रखने वाले इस महान भारतीय को काफी विरोधों का सामना करना पड़ा। किन्तु राष्ट्र भक्ति ही जिनका ध्येय हो ऐसे महानपुरूष को कौन उद्देश्यों से डिगा सकता था।

संदर्भ सूची

उपाध्याय, दीनदयाल — *एकात्म मानववाद*, सुरूचि प्रकाशन, नई दिल्ली।

उपाध्याय, दीनदयाल — *राष्ट्र जीवन की दिशा*, सुरूचि प्रकाशन, नई दिल्ली।

उपाध्याय, दीनदयाल — *पॉलिटिकल डायरी*, सुरूचि प्रकाशन, नई दिल्ली।

उपाध्याय, दीनदयाल — *The Two Plans: Promises, Performance, Prospects*.

उपाध्याय, दीनदयाल — *Integral Humanism*, Deendayal Research Institute, New Delhi.

शर्मा, महेश चन्द्र — *दीनदयाल उपाध्याय: आधुनिक भारतीय राजनीति के शिल्पकार*, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।

शर्मा, महेश चन्द्र — *Deendayal Upadhyaya: A Biography*, Diamond Books, New Delhi.

दीनदयाल शोध संस्थान — *पंडित दीनदयाल उपाध्याय: संपूर्ण वाङ्मय*, नई दिल्ली।

Deendayal Research Institute — *Deendayal Upadhyaya: Selected Speeches and Writings*, New Delhi.

Declaration by Author (s): *"I/We hereby declare that this manuscript is my/our original work, free from plagiarism, and that all sources and any use of Artificial Intelligence tools for content generation or editing have been fully disclosed and verified for accuracy."* ***डा0 कर्मेन्द्र सिंह सेंगर***